अथ दशमोऽध्यायः

दसमाँ बिभूतियोग अद्धयाय

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो, शृणु मे परमं वचः।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय, वक्ष्यामि हितकाम्यया।। १

स्रीभगुवान् बोल्ले

(किरसण नै आग्गै बात बढाई)

फिर तैँ अर्जन सुण तैँ मेरी, आच्छी वाणी, जो तन्नै मैँ।
खुस होन्दै नै इब बोल्लूँगा, भला करण की इच्छा तैँ रै।। १

न मे विदुः सुरगणाः, प्रभवं न महर्षयः।
अहमादिर्हि देवानां, महर्षीणां च सर्वशः।। २

(मेरा जलम न कोए जाणै)

नाँ मेरा जाणैँ देव सभी, जलम, प्रभाव महर्सी बी नाँ।
मैँ जो सूँ, क्यूँकी, देवाँ का, महरिसियाँ का उपादान अर।
निमित प्रवर्तक सारी तह्नियाँ।। २

यो मामजमनादि च, वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असंमूढः स मर्त्येषु, सर्वपापैः प्रमुच्यते।। ३

(जो जाणै पाप्पाँ तैँ छूट्टै)

जो मन्नै नहीँ जलमदा अर, बिना मूळ का इस दुनियाँ का।
जाणै परमेसर, मोहरहित वो, मरणधरम सब जीवाँ मैँ।
सारे पाप्पाँ तैँ छूट्टै सै।। ३

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः, क्षमा सत्यं दमः शमः।
सुखं दुःखं भवोऽभावो, भयं चाभयमेव च।। ४

(प्राणी मैँ ईस्स्वर की बीस बिभूत्ती)

[१]इन्द्री, मन, चित, हङ्कारॉं तैँ, ऊपर 'बुद्धि' विवेक करावै।
[२]सत् ओर असत्, आत्माऽनात्मा, बन्ध, मोक्स की समझ 'ग्यान' सै।।
बुद्धी तैँ वो होवै अर्जन, उस तैँ होवै [३]'नास मोह' का।
[४]मन नै लाग्गै बुरा किमे जो, उस नै सहणा सुभा 'क्समा' सै।।
[५]देख्या, भोग्या, सुण्या जिसा जो, वो ए बोल्ल्या उसै तह्नाँ का।
'सत्य' कुहावै सै वा बोल्ली, [६]बगटूट भाजदी बिसयाँ नै।।
इन्द्री अर मन काब्बू राक्खै, 'दमन' कुहावै भोत जरूरी।
[७]मन, चित्त, अहङ्क्रिति, बुद्धी नै, बिसयाँ तैँ दूर रख्यैँ 'सान्ती'।।
रोळा-रबदा, क्सोभ, किमे नाँ, माणस मैँ ये होवैँ कद्दे।
[८]'सु+ख=सुख' मन नै आच्छा लाग्गै, [९]उल्टा होन्दे, ताप 'दुःख' सै।।
[१०]'भव' उत्पत्ती, होणा, रहणा, [११]'अभाव' पदारथ का नाँ रहणा।
[१२]बुरा होण की सङ्का तैँ डर, [१३]'अभय' निडरता विपदा मैँ बी।। ४

अहिंसा समता तुष्टिस्, तपो दानं यशोऽयशः।
भवन्ति भावा भूतानां, मत्त एव पृथग्विधाः।। ५

[१४]तन, मन, वचनाँ तैँ तन, मन नै, कस्ट न देणा कही 'अहिंसा'।
[१५]अनुकूल'र विपरीत स्थिती मैँ, गरम सरद मैँ अर सुख दुख मैँ।।
रहै एक-सा, बिचळै नाँ जो, 'समता' वा सै माणस मन की।
[१६]'तुस्टि' तोस सै, 'काफी इतणा', थोड़ै मैँ बी खुस ए रहणा।।
[१७]'तप' सै काया, इन्द्री, मन तैँ, कस्ट सहै जो स्रेस्ठ लक्स्य तैँ।
[१८]उचित समै मैँ, उचित जघाँ मैँ, सत्पात्र, गुणी नै स्रद्धा तैँ।।
आप्णापण तज किम्मे देणा, 'दान' कुहावै दुनियाँ मैँ यो।
[१९]सुभ काम्माँ तैँ दुनियाँ आळे, करैँ प्रसंसा, कीर्ती 'जस' सै।।
[२०]'अपजस' होवै बुरै काम तैँ, निन्दा जग मैँ बीस भाव यैँ।
भूत्ताँ के हौँ अलग तह्नाँ के, मत्तैँ ए रै अर्जन, सारे।। ५

महर्षयः सप्त पूर्वे, चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता, येषां लोक इमाः प्रजाः।। ६

(परमात्मा की सैँ ओर बिभूत्ती)

सात महर्सी-भ्रिगु, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, मरीचि, क्रतु, वसिस्ठ अर।
इन तैँ पहल्याँ च्यार रहे जो, सनक, सनन्दन, सनत, सनातन।।
चिर कुमार ये, अथवा मनु थे, च्यार नाम तैँ 'सावर्णी' सब।
सावर्णि, दक्षसावर्णि तथा धर्मसावर्णि ये तीन हुए।।
'सावर्णि' हुए चौत्थे मनु थे, सनकादी या च्यार महर्सी।
चौदा मनु 'स्वायम्भुव' आदी, सब का मुझ मैँ भाव लग्या था।।
'हिरयगर्भ' रूप मैँ मन्नै, मन तैँ सिरजे थे ये सारे।
जिन नै सिरजी दुनियाँ मैँ या, तह्नाँ-तह्नाँ की सारी परजा।। ६

एतां विभूतिं योगं च, मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकम्पेन योगेन, युज्यते नात्र संशयः।। ७

(बिभूति जाणन की महिमा)

ये जो मेरा तह्नाँ-तह्नाँ तैँ, होणा, वैभव, जग मैँ दीक्खै।
अघटित-घटना-सामर्थ्य भोत, मेरा जो जाणै तन्त समझ मैँ।।
वो नाँ कम्पित होणै आळी, सम्यग् दर्शन की स्थिरता तैँ।
होवै युकत, न इस मैँ साँस्सा।। ७

अहं सर्वस्य प्रभवो, मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां, बुधा भावसमन्विताः।। ८

'मत्तैँ' सारै जग की स्रिस्टी, मत्तैँ सब कुछ चाल्लै सै यो।
आप्णा-आप्णा काम करैँ सैँ, या मान सरण मैँ आवैँ मेरी।
ग्यान्नी मुझ मैँ प्रेम रखैँ जो।। ८

मच्चित्ता मद्गतप्राणा, बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं, तुष्यन्ति च रमन्ति च।। ९

मेरै मैँ लाग्गै मन आळे, 'मैँ' ए जिन कै मन मैँ रहँदा।
मुझ मैँ जिन के प्राण बसैँ सैँ, इन्द्रिय सारी मन्नै जाणैँ।।
आँख देखदी मन्नै सब मैँ, कान सुणैँ वा मेरी वाणी।

नाक्काँ तैँ जो सूँग्घै माणस, मेरी ए वा गन्ध जगत् मैँ।।
रस ले रसना चटखारे खा, मैँ ए वो दुनियाँ मैँ रस सूँ।
करड़ा, नरम, गरम जो जाणै, मैँ ए वो सूँ स्पर्श जगत् मैँ।।
हाथ रूप मैँ करूँ काम सब, पाँव बण्या मैँ जान्दा सब दिस।
मलमूत्र काढदी मोरी बण, काया नै मैँ निर्मळ करदा।।
बोल्लैँ सैँ जो आच्छा माड़ा, सब रूप्पाँ मैँ वाणी मैँ सूँ।
मन मैँ मन्नै बिठा देख ले, अर्पित कर कैँ मन्नै मन तैँ।।
देख किसा के तेज मिलैगा, जीवन सारा धन्य बणैगा।
मन्नै सौँप्या जीणा जिन नै, ग्यान कराँदै इक-दूज्जै नै।।
वर्णन करदे मेरा नित वैँ, जो मिल ज्या, उस मैँ खुस रहँदे।
आनँद अनुभव सदा करैँ अर।। ९

तेषां सततयुक्तानां, भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं, येन मामुपयान्ति ते।। १०

उन नै, लाग्गे सदा रहैँ जो, सेवा करदे प्रेमभाव तैँ।
देऊँ मैँ वा ग्यान समाधी, जिस तैँ मन्नै पावैँ सैँ वैँ।। १०

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो, ज्ञानदीपेन भास्वता।। ११

उन पै ए दया करण नै मैँ, अग्ग्यान कारणै होणाळै।
क्लेस देणियै अन्धेरै नै, नस्ट करूँ सूँ बुद्धी मैँ स्थित।
हो कैँ सब कै ए चमकील्ला, दीप बाळ कैँ आत्मग्यान का।। ११

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम, पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्।। १२

अर्जन बोल्ल्या
(भगुवान् की परसंसा)

दुनियाँ तैँ ऊप्पर ब्रह्म परम, सब तैँ बढ़ कैँ तेज, पवित्तर।

शोधक, सुद्ध सभी तैँ बढ़ कैँ, आप किसन, सो, या मैँ समझूँ।।
कायापुर, ब्रह्माण्ड पुरी मैँ, बसदै नित्त सदा तैँ स्थित अर।
तेजोमय उस परम धाम मैँ, रहणाळै 'देव' प्रकासित अर।।
तेज्जाँ के बी तेज प्रकासक, मूळ सबै का ओर अजन्मा।
विविध रूप मैँ सै जो व्यापक।। १२

आहुस्त्वामृषयः सर्वे, देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः, स्वयं चैव ब्रवीषि मे।। १३

कहँदे न्यूँ सैँ तन्नै रिसि सब, देवरिसी 'नारद' अर 'देवळ'।
'असित', महर्सी 'व्यास' तथा खुद, तैँ बी ईब कहै सै मन्नै।। १३

सर्वमेतदृतं मन्ये, यन्मां वदसि केशव।
न हि ते भगवन् व्यक्तिं, विदुर्देवा न दानवाः।। १४

सारा यो सच मान्नूँ मैँ सूँ, जो मन्नै तैँ कहँदा केसो।
ना क्यूँकी, तेरे हे भगवन्, प्रगट प्रभाव प्रभव नै जाणैँ।
देव सभी अर नाँ ए दान्ने।। १४

स्वयमेवात्मनाऽऽत्मानं, वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।
भूतभावन भूतेश, देवदेव जगत्पते।। १५

(खास बिभूत्ती बताण की प्राथना)

खुद्दे खुद तैँ आप्णा आप्पा, जाणै सै तैँ रै परसोतम।
भूत्ताँ नै रे जलम देणिये, भूत्ताँ के रै सासक, मालक।
देवाँ के बी देव, जगत् के, जन्मप्रदाता अर रखवाळे।। १५

वक्तुमर्हस्यशेषेण, दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।। १६

बता ईब तैँ पूरी तहियाँ, अद्भुत आप्णा वैभव जो सै।
महिमा फैल्ली तेरी जो सै, जिन कै द्वारा इन लोक्काँ नै।
ब्यापत कर कैँ तैँ स्थित हो सै।। १६

कथं विद्यामहं योगिंस्, त्वां सदा परिचिन्तयन्।
केषु केषु च भावेषु, चिन्त्योऽसि भगवन् मया।। १७

क्यूक्कर जाणूँ मैं हे योग्गी, तेरा सब दिन चिन्तन करदा।
किन-किन भावाँ, रूप्पाँ मैं सै, चिन्तन करणा तेरा भगवन्?।। १७

विस्तरेणात्मनो योगं, विभूतिं च जनार्दन।
भूयः कथय तृप्तिर्हि, शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्।। १८

खोल, फळा कैं आप्णी सक्ती, ओर विभूती किरसण, फिर तैं।
कह तैं, त्रिप्ती, क्यूँकी, नाँ हो, इमरत वाणी सुणदै मन्नै।। १८

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि, दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ, नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे।। १९

स्रीभगुवान् बोल्ले
(कही बिभूत्ती खास तिरास्सी)

बड़ी खुशी सै, तन्नै इब मैं, बोल्लूँगा सै अद्भुत मेरी।
सक्ती, वैभव, ऐस्वर्य घणा, खास-खास जो उन मैं वैं सैं।
कुरुआँ मैं हे सब तैं आच्छे, ओड़ न मेरै वैभव का सै।। १९

अहमात्मा गुडाकेश, सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च, भूतानामन्त एव च।। २०

[१]मैं सूँ आप्पा, निद्रा तन्द्रा, अळकस, ग़फ़लत जीत्तणिये रै।
सब भूत्ताँ की बुद्धी मैं स्थित, [२]मैं सूँ 'आदि' जलम का कारण।
[३]'मध' बी मैं सूँ स्थिति का कारण, [४]भूत्ताँ का 'अन्त' प्रलै बी मैं।। २०

आदित्यानामहं विष्णुर्, ज्योतिषां रविरंशुमान्।
मरीचिर्मरुतामस्मि, नक्षत्राणामहं शशी।। २१

[५]'पश्यक', 'कश्यप' दिव्य प्रजापति, उस की सक्ती 'अदिती' के सुत।
बारा जो 'आदित्य' तपैं सैं, उन मैं मैं सूँ दोफारी का।।
बामन, सुन्दर, सूरज, 'बिष्णू', [६]'ज्योति' प्रकासित ओर प्रकासक।

तेज्जाँ मैं 'रवि' किरणाँ आळा, [७]आवह प्रवह विवह परावह।।
उद्वह संवह परिवह नामक, सात गणाँ के सात-सात जो।
गण सैं वायू के, उन मैं मैं, 'मरीचि' नाँ का वायू होऊँ।
[८]नक्सत्राँ मैं सूँ चन्दा।। २१

वेदानां सामवेदोऽस्मि, देवानामस्मि वासवः।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि, भूतनामस्मि चेतना।। २२

[९]'बेद' ज्ञान सै आनँदप्रदाता, वो सै प्रगटै सबदाँ तैं।
ग्यानबिधा सब मन बुद्धी नै, खुस सैं करदी कान पड़ैं जिब।।
जीवन बी यैं सुखमय करदी, कारण-कार्य-बिबेचन कर कैं।
बात कहैं जो लय मैं बान्द्धी, गिणे-मिणे स्वर, छन्द-बन्ध तैं।।
ऊँच्ची नीच्ची लहर धुनी की, उठदी पड़दी लै मैं नाच्चैं।
इस तह्रियाँ के सबदाँ मैं, कवि मेधावी अद्भुत सोच्चैं।।
'देव' पदारथ रित नै सास्वत, धरदी, जग की गति नै जो।
उन की प्रग्ग्या रितम्भरा मैं, प्रगट हुए जो उन का अर्चन।।
स्तवन वन्दना जग की हितकर, देख समझ कैं 'रिसि' थे इस तैं।
ओर मोज मैं आ क्यैं वैं ए, गाए जिब ज्याँ लय, तान, सुराँ मैं।।
ह्रिदै तन्त्रिका के तार छेड़ कैं, 'गीत' बणैं सैं पद्य वही सब।
'सा' या धरती 'अम' वो अम्बर, दोन्नूँ आ क्यैं मिल गे मान्नौं।।
सबद अरथ का, आनँद सुर का, मेळ बणै जिब 'साम' बणै सै।
'रिग्बेदै' यो रिसियाँ नै था, 'सामबेद' कह न्यारा मान्न्या।।
बाक्की हाम् जो बात कह्नाँ साँ, नाप्पे-जोक्खे ओर गिणे नाँ।
अक्सर, मात्रा बन्धन तोड़े, 'गद्य' कह्नैं सैं उस नैं सारे।।
करमाँ का निर्देस गद्य तैं, 'यजुस्' नाम तैं रिसियाँ नै ये।
निर्देस धरे 'यजुर्बेद' मैं, 'बेद' ग्यान नै प्रगट करण के।।
इन तीन्नूँ खास तरीक्क्याँ मैं, आनँददाता 'सामबेद' मैं।
गाया जा जो सबद वही सूँ, [१०]'देव' प्रकासित बिसै करैं जो।।

ग्यान करैं जो ओर करावैं, उन मैं मैं सूँ 'इन्द्र' प्रकासक।।
[११]'इन्द्र' जीव के क्रिया ज्ञान के, साधन सारे काया मैं स्थित।
ग्यान'र करम कराँदी इन्द्री, उन मैं मैं सूँ 'मन' रै अर्जन।।
[१२]भूत पाँच जो कारण कारज, बण सब का अस्तित्व करावैं।
[१३]उन मैं ब्यापत बुद्धि व्रित्ति मैं, जिस तैं चेतन सब कुछ होवै।। २२

रुद्राणां शंकरश्चास्मि, वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि, मेरुः शिखरिणामहम्।। २३

[१४]वीरभद्र, सङ्कर ओर गिरिस, अज, एकपाद, अहिर्बुध्न्य अर।
पिनाकि, उमेस, कपाली, दिक्पति, स्थाणू, रुद्दर, इन ग्यारा मैं।।
'सङ्कर' मैं सूँ सान्त करणियाँ, [१५]धन कै कारण पूज्जे जान्दे।
यक्साँ मैं अर धन खोस्सणिये, जिन तैं रक्सा सब्बै चाह्वैं।।
स्वारथकारण हिंसा करदे, राक्षसव्रित्ती लोग्गाँ मैं मैं।
सर्वहितैसी, सबहितकारी, धनपति यक्स 'कुबेरा' मैं सूँ।।
[१६]ध्रुव अर अध्वर आप सोम अर, अग्नि अनिल प्रत्यूस प्रभासा।
आठ चिमकदे वसुआँ मैं मैं, अग्निदेव सूँ सुभ ओर असुभ।।
सब हाल्लाँ मैं काम आणियाँ, सुद्ध पवित्तर करणै आळा।
[१७]नाम 'सुमेरू' रीढ जिसा मैं, धरती की, खड़े पहाड़ाँ मैं।
जिस कैं च्यारूँ कान्हीं घूम्मैं, ज्योर्तिमय सब, वो बी मैं सूँ।। २३

पुरोधसां च मुख्यं मां, विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।
सेनानीनामहं स्कन्दः, सरसामस्मि सागरः।। २४

[१८]पिह्वोत्ताँ मैं अर मुख्य मन्त्रै, जाण ले अर्जन, तैं भिरस्पत।
[१९]सेनापतियाँ मैं स्कन्द तथा, [२०]जोहड़ झील्लाँ मैं सूँ सागर।। २४

महर्षीणां भृगुरहं, गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः।। २५

[२१]महर्सियाँ मैं भिर्गू मैं सूँ, तप तैं खुद नै खूब तपाया।
[२२]नाद, बरण, पद, वाक्य रूप मैं, सबद उचारैं सैं जो प्राणी।।

आपणै मन की बात कहण नै, मन बाच्छै नै जलम देण नै।
भासा, बोल्ली जो सैं, उन मैं, अनहद सै ब्रह्माण्डविवर मैं।।
कण्ठ होंठ कै बीच विवर मैं, स्वर व्यञ्जन बण 'ओम' सबद वो।
अक्सर एक परम का वाचक, [२३]'यग्ग्य' पूजणाँ देवाँ का जो।।
द्रव्य देवता, विधिविधान तैं, करणा उन का भोत कठिन सै।
जपणा प्रभु का नाम उचारण, यग्ग्य परम यो उन मैं होऊँ।
[२४]स्थावर अडिग पहाड़-रूँख-से, उन मैं स्रेस्ठ हिमालै मैं सूँ।। २५

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां, देवर्षीणां च नारदः।
गन्धर्वाणां चित्ररथः, सिद्धानां कपिलो मुनिः।। २६

[२५]पीपळ सूँ मैं सब पेड़ाँ मैं, [२६]होन्दे देव बणे थे रिसि जो।
तत्त्वग्यान नै देख, बता क्यैं, उन मैं नारद नाम रिसी सूँ।।
[२७]गन्धर्वा मैं चित्ररथा मैं, [२८]सिद्ध जलम तैं, बैराग परम।
जिन नै साध्या, उन सब मैं मैं ,कपिल मुनी सूँ साङ्ख्यप्रवर्तक।। २६

उच्चैःश्रवसमश्वानां, विद्धि माममृतोद्भवम्।
ऐरावतं गजेन्द्राणां, नराणां च नराधिपम्।। २७

[२९]इमरत खात्तर साग्गर मथदे, होया 'उच्चैःश्रव' घोड़्याँ मैं।
[३०]'ऐरावत' मैं गजराज्जाँ मैं, [३१]जाण मनुस्याँ मैं अर राज्जा।। २७

आयुधानामहं वज्रं, धेनूनामस्मि कामधुक्।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः, सर्पाणामस्मि वासुकिः।। २८

[३२]हथियाराँ मैं मैं सूँ बज्जर, धीर, तपस्वी, बलिदानी के।
हाड्डाँ तैं जो बण्या, वज्र वो, [३३]गऊवाँ मैं मैं 'कामधेनु' सूँ।।
मर्जी हो जिब दूध काढ ल्यो, [३४]सन्तान करै उत्पन जो वा।
मैथुन-सक्ती इच्छा मैं सूँ, [३५]साप्पाँ मैं मैं 'वासुकि' होऊँ।
'वसुक' काँच की चिमकण आळी, पहरे हो मनु लत्ता सोण्हा।। २८

अनन्तश्चास्मि नागानां, वरुणो यादसामहम्।
पितॄणामर्यमा चास्मि, यमः संयमतामहम्।। २९

[३६]'सेस नाग' सूँ नाग्गाँ मैँ मैँ, [३७]सारे जलचर प्राणिजगत् का।
राज्जा 'वरुणदेव' बी मैँ सूँ, [३८]पितराँ मैँ पितृराज 'अर्यमा'।।
[३९]'यम' सूँ मैँ भले-बुरे सारे, कर्मां का फळ कृपा, दण्ड दे।
करै नियन्त्रित दुनियाँ नै न्यूँ।। २९

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां, कालः कलयतामहम्।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं, वैनतेयश्च पक्षिणाम्।। ३०

[४०]कस्यपपत्नी 'दिति' जो बाँड्डै, आप्णै पति की सन्तानाँ नै।
उस के बंसज तोड़फोड़ की, भेदभाव की वृत्ति बढाँदे।।
उन मैँ उत्पन उन नै आप्णी, सहनसीलता तैँ सब नैँ ए।
खुस जो राक्खै दैत्य 'पह्लादा', रस्तै ल्याँदा, वो मैँ सूँ।।
[४१]गिण-गिण छण-छण बस करद्याँ मैँ, बली काळ बी सूँ मैँ अर्जन।
[४२]वनचर पसुआँ मैँ मृगपति मैँ, बन मैँ सेर दहाड़ै, वो सूँ।।
[४३]'पश्यक' 'कश्यप' देक्खण आळै, रिसिवर ओर प्रजापति उस की।
पत्नी 'विनता' विनयी का सुत, नील गगन मैँ उड़णै आळे।
उड़नाळ्याँ मैँ गरुड़ पँखेरु।। ३०

पवनः पवतामस्मि रामः, शस्त्रभृतामहम्।
झषाणां मकरश्चास्मि, स्रोतसामस्मि जाह्नवी।। ३१

[४४]पोन मैँ हर बखत चलद्याँ मैँ, [४५]रामचन्द्र मैँ सस्त्रधराँ मैँ।
[४६]मत्स्य जाति मैँ मगरमच्छ मैँ, [४७]बहँदे झरण्याँ नदियाँ मैँ अर।
पापनासनी गङ्गा मैँ सूँ।। ३१

सर्गाणामादिरन्तश्च, मध्यं चैवाहमर्जुन।
अध्यात्मविद्या विद्यानां, वादः प्रवदतामहम्।। ३२

सृस्टी जिन की हो सै उन का [४८]होणा, [४९]रहणा ओर [५०]प्रलै बी।
मैँ ए सूँ अर्जन, मैँ ए सूँ, [५१]दर्शन सास्तर परमततव का।।
ग्यान कराँदा विद्याआँ मैँ, जिस तैँ पावै माणस मुक्ती।
नाँ-समझी तैँ होणै आळे, तन के मन के सब दुक्खाँ तैँ।

[५२]निर्णय खात्तर बहस करणिये, तरकसास्त्रियाँ का वाद बणूँ।। ३२

अक्षराणामकारोऽस्मि, द्वन्द्वः सामासिकस्य
च ।
अहमेवाक्षयः कालो, धाताहं विश्वतोमुखः।। ३३

[५३]बोल्ली बोल्लैँ चेतन प्राणी, आहत नाद धुनी तैँ सारे।
सब काळाँ देस्साँ मैँ माणस, अक्सर वर्णां तैँ सबद बणा कैँ।।
पद कै रूपै वाक्य बोल कैँ, आप्णै मन की बात बताँदे।
उस मैँ सब तैँ छोट्टा पहला, घटक बणै सै 'अक्षर' यो।।
देस काल अर करणजतन तैँ, परगट होवै मुँह तैँ अक्सर।
सारी मिल इक्क्यावन धुनि सैँ, एक मातरा सोळ्हा कलियाँ।।
पूरी हों सैँ पाँच स्वराँ की, सु+अर=सुवर=स्वर न्यूँ बोल्ल्या।
आच्छी पूरी गति सै इस की, स्वयं राजदा निज सोभा तैँ।।
आस्रित नाँ यो ओर वरण पै, चेतन ब्रह्म समाया इस मैँ।
दूजी धुनि सै व्यञ्जन बण कैँ, प्रगट व्यक्त हो स्वरसंयोगी।।
त्रिगुणा प्रक्रिती का फैलावा, अर्धस्वर अर स्पर्स ऊस्म ये।
नाकछिद्र मैँ प्रगटैँ दो धुनि, स्वर कै अनुगत स्वर मैँ व्यापत।।
अनुस्वार अर अनुनासिक ये, च्यार स्पर्स जो च्यार स्थान मैँ।
नाक्काँ तैँ बी बोल्ले जावैँ, जुडमा-सी धुनि सूक्स्म भोत सैँ।।
वायुविसर्जन महाप्राण हो, स्वर कै पाच्छै बोल्ल्या जावै।
घोस कण्ठ्य अर ओस्ठ्य स्पर्स तैँ सँवार जतन तैँ ओर बणैँ।।
जिह्वामूल'र उपध्मान तैँ फूल्ल्यै मुँह तैँ बोल्ले जा कैँ।
दो ये धुनि न्यूँ ओर बणै सैँ, सैँताळिस न्यूँ सैँ सारी धुनि सैँ।
च्यार तह्राँ के यम थे जाणे, प्राक्रित पाली तैँ बी पहले।।

जाणे जाँदे बेदकाल मैँ, जिब 'सिक्सा' थी अनुभव-आस्रित।
'अ+इ', 'अ+उ' सम्भु-भवानी-से ये, मिल कैँ सन्ध्यक्षर बण ज्याँ सैँ।।
युगनद्ध रूप यो इन दो का, सन्ध्यक्षर बण जाण्या जा था।

पूरी-पूरी दो मात्रा का, 'अइ' 'अउ' रूपे बोल्ल्या जा था।।
सक्कर-पाणी ज्यूँ मिल इब ये, 'ए', 'ओ' रूपे बोल्ली जाँ सैँ।
ह्रस्व-दीर्घ मिल दोन्नूँ स्वर ये, एक बणैँ नरसिंहसरीखे।।
मात्रा इन की तीन च्यार थी, पतञ्जली तक बोल्ली जाँ वैँ।
सन्यक्षर ये दोन्नूँ स्वर सैँ, दोन्नूँ मात्रा ह्रस्व परन्तू।
दोमात्रिक ये नरसिंह जिसे सैँ, एक वरण बण जाणे जान्दे।।
स्वर अर व्यञ्जन वरण रूप मैँ, 'अक्षर' अविनासी स्वर धुनियाँ।
उन मैँ प्रथम कण्ठ मैँ प्रगटित, 'अ' वर्ण धुनी सूँ मैँ रै अर्जन।।
सन्ध्यक्षर जो दो धुनियाँ का, शम्भु-भवानी अर्धनटेश्वर।
अकार उकार धुनियाँ मिलदी, ओँठ नासिका मैँ जो गुञ्जित।
'ओम' सबद जो वाचक पर का उस की, मात्रा पहली सूँ मैँ।।

[५४]अलग-अलग नै, ब्यास रूप मैँ, कहे पदारथ पद जो जोड़ैँ।
उन समासाँ मैँ 'द्वन्द्व' मैँ सूँ, गौण प्रधान नहीँ जो करदा।।
'व्यस्टि समस्टी एक रूप सैँ', ग्यान करावै यो जो, मैँ वो।
'इतरेतर' सूँ भेदभाव अर, एक बणा कै 'समाहार' सूँ।।
न्यूँ सूँ 'द्वन्द्व' समासाँ मैँ मैँ, समता भाव बढावै जो वो।
[५५]मैँ ए अर्जन, क्षय नाँ जिस का, धारावाही 'काळ' वही सूँ,।।
[५६]धारण सब नै करदा दे कैँ, कर्मा के फळ, सबी तरफ नै।
मुँह आळा उन का भोक्ता मैँ।। ३३

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां, स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।। ३४

[५७]म्रित्यु' सूँ मैँ सब के सब कुछ, काया, माया, सम्पद् हरदा।
सारी सृस्टी थी, सै, होगी, उस का बी मैँ नाश करणियाँ।।
[५८]'ऊँच्चा होणा' ओर जनम मैँ, होणाळ्याँ का, सब का मैँ सूँ।
[५९]आच्छा होणै कारण 'जस' मैँ, [६०]'सोभा' सुन्दरता तन-मन की।।
[६१]'वाणी' प्यारी हितकर सच्ची, [६२]अनुभव नै मन मैँ राक्खण की।

सक्ती 'स्मृति', अर [६३]ज्ञात बिसै की, धारणसक्ती 'मेधा' [६४]धीरज'।।
[६५]'क्समा' सहै अपमान आपणा, खास बात ये स्त्रीलिङ्गी सब।
सात पत्नियाँ धरमदेव की, मैँ ए, अर्जन, सब मैँ होऊँ।
इन सात गुणाँ नै अपणा कैँ, बण्या रहै, गिरदा नाँ माणस।। ३४

बृहत्साम तथा साम्नां, गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।। ३५

[६६]इन्द्रदेव का गायन करदा, 'बृहत्साम' सूँ साम्माँ मैँ मैँ।
[६७]'गायत्री' सूँ सात भाँत के, छन्दाँ मैँ मैँ अर [६८]सत्ताईस।।
नच्छत्राँ मैँ चाँद चालदा, म्रिगसीरस मैँ पूरा चिमकै।
वो ए भीन्ना 'मँगसर' मैँ सूँ, [६९]इन नच्छत्राँ की बारा जिब।।
रासी बदलै सूरज दो-दो, धरती कै इस गोळै ऊप्पर।
मौसम बदल्यैँ छह रितु होवैँ, इन मैँ मैँ सूँ रितु वा अर्जन।।
फूल खिलैँ जिब कूणैँ कूणैँ, फूल्लाँ के जिब भण्डार भरैँ।
बाळे, बूड्ढे ओर जवाँ कह, 'आया बसन्त' स्वागत करदे।
रङ्ग-बिरङ्गी चून्दड़ ओड्ढैँ, धरती नाच्चै माच्ची-माच्ची।। ३५

द्यूतं छलयतामस्मि, तेजस्तेजस्विनामहम्।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि, सत्त्वं सत्त्ववतामहम्।। ३६

[७०]'जूआ' कपट करणियाँ का मैँ, [७१]देक्ख्याँ तैँ ए झळ मारणियाँ।
तेज प्रताप सभी का मैँ सूँ, [७२]जीत 'विजय' मैँ जीत्तणियाँ की।
[७३]जीत्तण का उद्यम अर निस्चै, [७४]बळ बळवान्नाँ का मैँ सूँ।। ३६

वृष्णीनां वासुदेवऽस्मि, पाण्डवानां धनंजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः, कवीनामुशना कविः।। ३७

[७५]वृष्णि बँस के लोग्गाँ मैँ अर, वसुदेवपुत्र किरसण मैँ सूँ।
[७६]पाण्डू के पाँच सुताँ मैँ सूँ, लड़ कैँ धन जीत्तणियाँ अर्जन।।
[७७]चिन्तन मनन करणियाँ मैँ मैँ, व्यास मुनी सूँ, [७८]देस काल तैँ।
दूर भोत जो देक्खैँ उन सब, 'कवि' मेधावी लौग्गाँ मैँ मैँ।।

रिसि 'उशनस' आचार्य 'सुक्र' सूँ, असुराँ के जो परम गुरू सैं।
संजीवन विद्या दे उन नै, जीणै की वै कला सिखान्दे।। ३७

दण्डो दमयतामस्मि, नीतिरस्मि जिगीषताम्।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां, ज्ञानं ज्ञानवतामहम्।। ३८

[७९]गलत राह पै चाल्लण आळे, देस काळ कै नेम धरम नै।
तोड़णियाँ नै दाब राह पै, ल्याणै आळा तन-मन-धन का।
कस्ट पुच्छाँदा दण्ड कड़ा सूँ, [८०]नीति चालणा और चलाणाँ।
हानि लाभ नै सौच समझ कैं, जीत चाँहदे लोग्गाँ की मैं।।
[८१]चुप्पी मैं सूँ गुप्त बिसै मैं, [८२]स्रवण मनन तैं तह तक जाणाँ।
इसा ग्यान सूँ, ग्यान्नी जन मैं।। ३८

यच्चापि सर्वभूतानां, बीजं तदहमर्जुन।
[८३]अर जो बी सबै पदार्थाँ नै, बीज, जलम दे, तोड़ स्वयं नै।
सूँ वो मैं ए अर्जन सुण ले, सार बताऊँ तन्नै मैं यो।।
न तदस्ति विना यत् स्यान् मया भूतं चराचरम्।। ३९

(मेरे बिन किम्मे नाँ सै)

नाँ वो सै बिन जो हो मेरै, इस दुनियाँ मैं होणै आळा।
भूत भविस्य वर्तमान इन, तीन्नूँ काळाँ मैं ए अर्जन।।
किमे किसा बी स्थावर जङ्गम।। ३९

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां, विभूतीनां परंतप।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो, विभूतेर्विस्तरो मया।। ४०

(उपसंहार)

अद्भुत मेरे रूप प्रगट जो, तहाँ-तहाँ के दुनियाँ मैं सैं।
ओड़ न उन का कोए सै रै, आप्णै रिपु नै ताप देणिये।
यो तो थोड़ा बोल बताया, विभूतियाँ का फैलाव मन्नै।। ४०

यद् यद् विभूतिमत्सत्त्वं, श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं, मम तेजोऽशसम्भवम्।। ४१

जग मैं जो-जो गुणी पदारथ, सोभासाळी, ताकतवर सै।
वो-वो ए, कर निस्चै मेरै, तेज कै अंस तैं सै उत्पन।। ४१

अथवा बहुनैतेन, किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्।। ४२।।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः।। १०।।

या फिर इस भोत समझणै तैं, के सै तन्नै लेणा अर्जन?
व्यापत कर कैं मैं इस पूरै, जग नै एक अंस तैं, स्थित सूँ।
थाँभ जगत् नै एक अंस तैं, एक अंस तैं, स्थित सूँ, स्थित सूँ।। ४२

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्स्य मैं दसमाँ अध्याय पूरा होया।। १०।।

पूर्वसलोकयोग ३७२ + ४२ = ४१४